IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

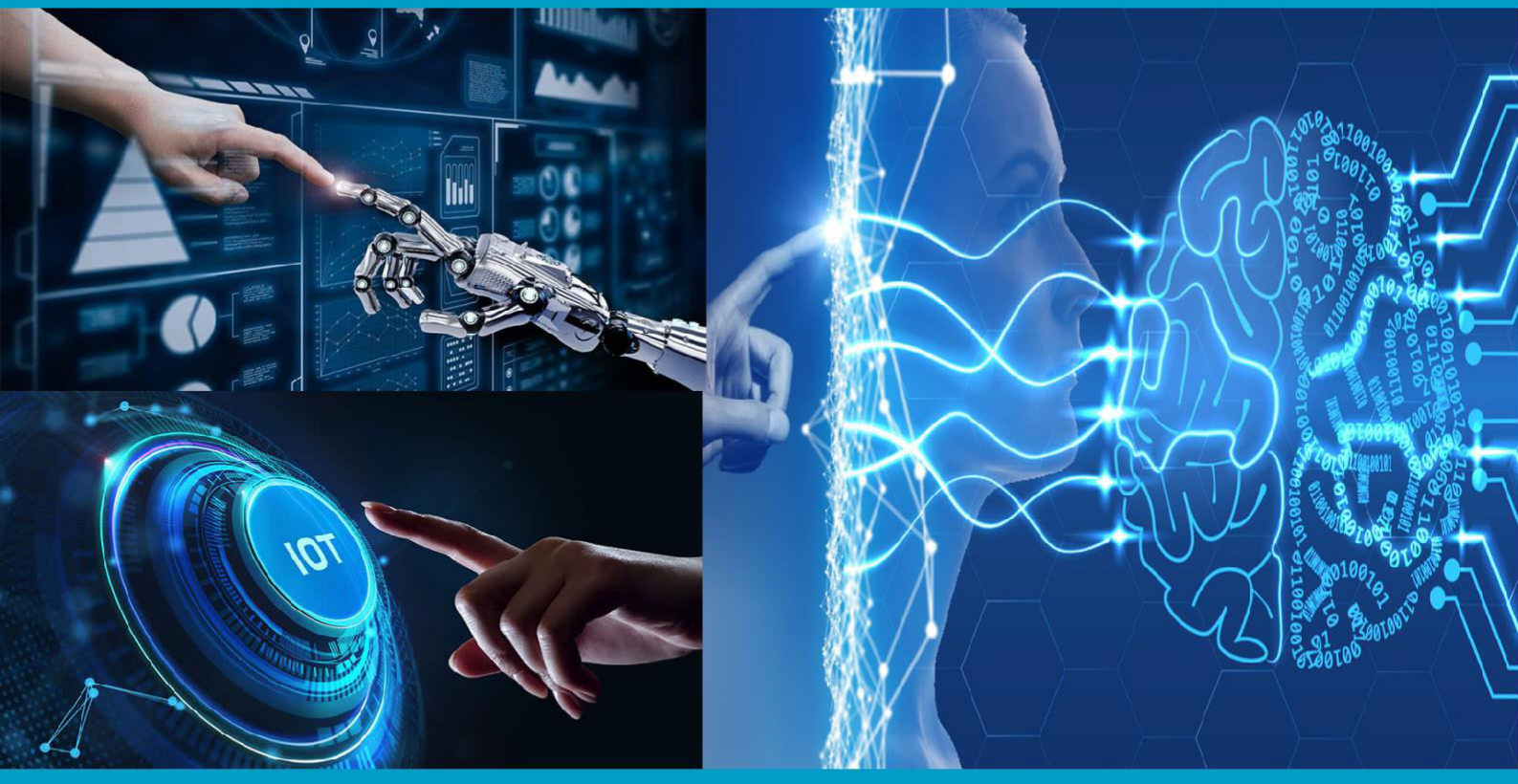

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 9, Issue 7, July 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

नारी- वेद मंत्रोच्चारण की अधिकारिणी

डॉ. लता शर्मा

सह आचार्य संस्कृत गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय अलवर

आधुनिक काल में अनेकश: भारतीय संस्कृति पर बात या कहें वाद-विवाद करते हुए ये कहा जाता है कि भारतीय संस्कृति मनुवादी संस्कृति है जहाँ लिङ्ग - भेद, जाति-भेद, वर्णभेद चरम पर था और उसके फलस्वरूप समाज के एक बड़े वर्ग को स्त्री वर्ग और शूद्र वर्ग के रूप में अपनी आध्यात्मिक उन्नति तो छोड़िए लौकिक सामान्य सम्मान प्राप्ति का भी अधिकार नहीं था।

स्पष्टतः 17 वीं शती से लेकर 19 वीं सदी तक ऐसा व्यवहार भारतीय समाज में यत्र - तत्र देखा जा सकता था किन्तु यह काल स्पष्टतः भारतीय समाज, सभ्यता और संस्कृति की गरिमा का निम्नतम काल था। उससे पूर्व लेकिन भारतीय सभ्यता , संस्कृति और समाज अपने व्यवहार में किसी भी प्रकार हीनता अथवा अवनति के बोधक नहीं थे। प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी लिङ्ग, वर्ण अथवा जाति के बन्धन के अपनी सम्पूर्ण लौकिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए स्वतन्त्र थे। इस पत्र में वैदिक काल से लेकर रामायण, महाभारत तथा अनेक पौराणिक उद्धरणों से यह तथ्य स्पष्ट होगा कि भारतीय संस्कृति में स्त्रियां न केवल वैदिक मंत्रों के उच्चारण की अधिकारिणी थी अपितु उनकी रचयित्री थीं और अपने आध्यात्मिक उन्नयन की स्वतन्त्र योग्यता रखती थीं।

मात्र लौकिक और भौतिक जगत ही नहीं, धर्मोपदेश के, योगाभ्यास के क्षेत्र में भी स्त्रियाँ पुरुष ऋषियों के समतुल्य ही अपना कार्य करती रही हैं तथा अनेक ऋषिकाएँ धर्मोपदेशिकाएँ प्राचीनकाल में होती रही हैं। उन्होंने इस उत्तरदायित्व का भली प्रकार निर्वाह किया है। इसके कितने ही उदाहरण पुराण, शास्त्रों में मिलते हैं। महाभारत शांति पर्व अध्याय 320/12,14-18 में विदुषी योगपारंगत सुलभा का एक संस्मरण इस प्रकार है-

सा प्राप्य मिथिलांरम्यां प्रभूतजनसंकुलाम् ।
भैक्ष्यचर्यापदेशेन ददर्श मिथिलेश्वरम् ।।
ततोऽस्याः स्वागतम् कृत्वा व्यादिश्य च वरासनम् ।
पूजितां पादशौचेन वरान्नेनाप्यतर्पयत् ।।

वह योगिनी-संन्यासिनी सुलभा जनसमूह से पूर्ण मिथिला में भिक्षा के उद्देश्य से राजा जनक के पास गई। तब राजा ने उसका स्वागत करके श्रेष्ठ आसन दिया। पाँवों को धोकर उसकी पूजा की तथा श्रेष्ठ अन्न से उसको तृप्त किया।

अथ भुक्तवती प्रीता राजानं मन्त्रिभिर्वृतम् ।
सर्व भाष्यविदां मध्येचोदयामास भिक्षुकी ॥
सुलभा त्वस्य धर्मेषु मुक्तो नेति ससंशया।
सत्वं सत्वेन योगज्ञा प्रविवेश महीपतेः ॥

प्रेम से भोजन करके मंत्रियों से युक्त राजा को सब भाष्य जानने वालों के मध्य में उस संन्यासिनी ने प्रेरणा की। सुलभा को संशय हुआ कि वह राजा धर्मों में युक्त है या नहीं। योग के जानने वाली अपने सत्त्व से राजा के सत्त्व में प्रवेश कर गई।

नेत्राभ्यां नेत्रयोरस्य रश्मीन् संयम्य रश्मिभिः ।
सास्म चोदयिष्यन्ती योगबन्धैर्बबन्ध ह॥
जनकोऽप्युत्स्मयन् राजा भावमस्या विशेषयन् ।
प्रति जग्राह भावेन भावमस्या नृपोत्तम ॥

तब उस सुलभा ने अपने नेत्रों की ज्योति से राजा के नेत्रों की ज्योति को काबू करके योग के बंधनों से राजा को बाँधकर प्रेरणा की। राजा जनक भी मुस्कुराते हुए उसके भाव को अधिक जानकर अपने भाव से उसके भाव को ग्रहण कर गए ।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

स्त्रियां वेद मंत्रों के उच्चारण की अधिकारिणी नहीं थी ये तथ्य इस तथ्य से स्वत: निर्मूल हो जाता है कि जिन्होंने वेद मंत्रों का सृजन किया वे ही उनके पठन - पाठन से वंचित कैसे रखी सकती हैं।

वेद मंत्रों के विनियोगों में उनके देवताओं, छंदों तथा ऋषियों का उल्लेख है। वेद ऋचाओं में ढेरों ऐसी हैं, जिनकी द्रष्टा - स्रष्टा ऋषिकाएँ महिलाएँ हैं। यह उन वेद मंत्रों के विनियोगों को देखने से स्पष्ट विदित होता है। यहाँ कुछ थोड़े से उदाहरण प्रस्तुत हैं, जिनसे यह जाना जा सकता है कि किस मंत्र की कौन-कौन ऋषिकाएँ हैं। नीचे के उल्लेख में ऋषिकाएँ, वेद-सन्दर्भ और मंत्र के प्रथम अक्षर दिए जा रहे हैं-

(1) सार्प राज्ञी कद्रू-यजु० 3/6 आयङ्गौः (2) लोपा मुद्रा-यजु० 17/11-नमस्ते हरसे (3) सरस्वती-यजु० 28/24-होता यक्षत् (4) गायत्री साम० पू० 1/9/1 अग्न ओजिष्ठ (5) वाजिनां स्तुति-साम० पू० 5/5/9-आविर्भ्याम् (6) शश्वत्याङ्गिरस्यासङ्गस्य पत्नी - ऋ० 8/1/34-अन्वस्य (7) अपाला के भी-ऋ० 8/91/1-कन्यावा (8) सिकता निवावरी-ऋ० 9/86/11-अभिक्रंदन् (9) यमी वैवस्वती- ऋ० 10/10/1-ओचित् (10) अदितिर्वा दाक्षायणी-10/ 72/1-देवानांनु (11) वागाम्भरणी-ऋ० 10/125/1-अहं रुद्रेभिः (12) रात्रिर्वा भारद्वाजी ऋ० 10/127/1-रात्रीव्यखद् (13) इंद्राणी-ऋ० 10/145/1-इमां खनामि (14) श्रद्धा कामायनी-ऋ० 10/151/1 श्रद्धयामि।

वाल्मीकि रामायण में ऐसे कितने ही प्रसंग आते हैं, जिनमें स्त्रियों का यज्ञोपवीत धारण, अग्निहोत्र एवं संध्या करने का उल्लेख है। स्पष्ट है कि ये दोनों ही धर्मकृत्य वेद मंत्रों के द्वारा संपन्न होते हैं। संध्योपासना में गायत्री मंत्र का प्रयोग अनिवार्य है। अग्निहोत्र क्रिया भी वेद मंत्रों के बिना नहीं हो सकती। इससे सिद्ध है कि स्त्रियों को सदा से वेद मंत्रों के उच्चारण का, गायत्री उपासना का एवं यज्ञ-कार्यों का पुरुषों के समान ही अधिकार रहा है।

होताऽध्वर्युस्तथोद्गाता हस्तेन समयोजयन्।
महिष्या प्रिरवृत्त्याथ वावातामपरां तथा ॥

होता, अध्वर्यु, उद्गाता आदि याज्ञिकों की सहायता से कौशल्या यज्ञ-कार्य में प्रवृत्त हुई।

सा क्षौमवसना द्रष्टा नित्यं व्रतपरायणा।
अग्निं जुहोति स्म तदा मन्त्रवत्कृतमङ्गला ॥
(वाल्मीकि० अयोध्या० स० 20/15)

धर्मनित्या यथाकालमग्नयगारपरा भव।
देवि देवस्य पादौ च देववत्परिपालय ।
(वाल्मीकि० अयोध्या० स० 58/18)

अथवा स्वयमेवाहं सुमित्रानुचरा सुखम् ।
अग्निहोत्रं पुरस्कृत्य प्रस्थास्ये येन राघवः ॥
(वाल्मीकि० अयोध्या स० 75/14)

जब राम कैकेयी के महलों से कौशल्या के महलों में पहुँचे, तब कौशल्या प्रसन्नचित्त व्रतपरायण होकर मंगलार्थ वेद मंत्रों से अग्निहोत्र कर रही थी।

जब भरत मामा के घर से आए, तब कौशल्या ने कहा- मैं स्वयं ही सुमित्रा को साथ लेकर सुखपूर्वक अग्निहोत्र को आगे करके वहीं चली जाऊँगी, जहाँ राम हैं।

सन्ध्या कालमनाः श्यामा ध्रुवमेष्यति जानकी।
नदी चेमाः शुभजलां संध्यार्थे वर वर्णिनी ॥
(वाल्मीकि० सुंदर० स० 49)

हनुमान सीता को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते जब अशोक वाटिका में पहुँचे, तब प्रातः अनुमान किया कि संध्याकाल हो जाने से संध्या करने के लिए वह श्यामा संध्या सुंदरी सीता इस शुद्ध जल वाली नदी पर अवश्य आएंगी।

वैदेही शोकसंतप्ता हुताशनमुपागतम् ॥25 ॥
(वाल्मीकि० सुंदर०)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

जब हनुमान जी के पकड़े जाने का समाचार सीता को मिला तो सीता शोक से दुखित होकर अग्निहोत्र करने चली गईं।

कांचनीं मम पत्नीं च दीक्षायां ज्ञाश्च कर्मणि ॥
- (वाल्मीकि० उत्तर० स० 91/25)

सीता के अभाव में राम ने यज्ञ-कार्य के लिए सोने की सीता बनाने की व्यवस्था करते हुए कहा- यज्ञकर्म की दीक्षा में सीता के स्थान पर मेरी सोने की पत्नी बनाओ।

यज्ञोपवीतमार्गेण छिन्ना तेन तपस्विनी ।
सा पृथिव्यां पृथुश्रोणी पपात प्रियदर्शना ॥
(वाल्मीकि रामायण)

रावण ने छलपूर्वक सीता का यज्ञोपवीत तोड़ डाला। इस पर दुखी होकर सीता पृथ्वी पर गिर पड़ी।

गते पुरोहिते रामः स्नातो नियतमानसः ।
सह पत्न्या विशालाक्ष्या नारायणमुपागमत् ॥
प्रगृह्य शिरसा पात्री हविषो विधिवत्ततः ।
महते दैवतायाज्यं जुहाव ज्वलितानिले ॥
(वाल्मीकि० अयो० स० 6)

पुरोहित ने अभिषेक का समाचार सुनाया तो पुरोहित के चले जाने पर राम ने स्नान किया और मन को एकाग्र करके अपनी सुंदर नेत्रों वाली पत्नी के साथ प्रथम संध्या की।

फिर प्रतिष्ठापूर्वक सामग्री के पात्र को लेकर विधि अनुसार परमात्मा की आज्ञापालन के लिए अग्नि में घृत का हवन किया।

इन उदाहरणों को देखकर भी यदि कोई नारी जाति को अपावन और ब्रह्मचर्य साधनाओं के अयोग्य ठहराता है तो वह अज्ञानी ही है। यह मानना पड़ेगा कि उनकी दृष्टि मध्यकाल के इतिहास तक है, वैदिक संस्कृति से वे कोरे ही समझे जाने चाहिए ।
ऋग्वेद 10/85 के संपूर्ण मंत्रों की ऋषिका 'सूर्या सावित्री' हैं। ऋषि का अर्थ निरुक्त में इस प्रकार किया है-

'ऋषिर्दर्शनात् स्तोमानं ददशेति ।
ऋषयो मंत्र द्रष्टारः ॥

मंत्रों का द्रष्टा उनके रहस्य को समझकर प्रचार करने वाला ऋषि होता है।
ऋग्वेद की ऋषिकाओं की सूची ब्रह्म देवता के 24 अध्याय में इस प्रकार है-

घोषा गोधा विश्ववारा, अपालोपनिषत्रिषत् ।
ब्रह्मजाया जुहुर्नाप्त अगस्त्यस्य स्वसा इति ॥84॥
इन्द्राणी चेन्द्रमाता च सरमा रोमशोर्वशी ।
लोपामुद्रा च नद्यश्च यमी नारी च शाश्वती ॥85॥
श्री लक्ष्मीः सार्पराज्ञी वाक् श्रद्धा मेधा च दक्षिणा ।
रात्री सूर्या च सावित्री ब्रह्मवादिन्य ईरिताः ॥86 ॥

घोषा, गोधा, विश्ववारा, अपाला, उपनिषत्, निषत्, जुहू, अदिति, इंद्राणी, सरमा, रोमशा, उर्वशी, लोपामुद्रा, यमी, शाश्वती, सूर्या, सावित्री आदि ब्रह्मवादिनी हैं।

ऋग्वेद के 5-28,8-19,10-39,10-40,10-95,10-107,10-109,10-134,10-154,10-159,10-189 आदि सूक्तों की मंत्रद्रष्टा यही ऋषिकाएँ हैं।

ऐसे अनेक प्रमाण मिलते हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह यज्ञ करती और कराती थीं। वे यज्ञविद्या और ब्रह्मविद्या में पारंगत थीं। कई नारियाँ तो इस संबंध में अपने पिता तथा पति तक का मार्गदर्शन करती थीं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

तैत्तिरीय ब्राह्मण में सोम द्वारा 'सीता सावित्री' नामक ऋषिका को तीन वेद देने का वर्णन विस्तारपूर्वक आता है।

तं त्रयो वेदा अन्वसृज्यन्त ।
अथ ह सीतां सावित्री। सोमं ।
राजानं चकमे ।
तस्या उहात्रीन्वेदन्प्रददौ ।।
(तैत्तिरीय ब्राह्मण 2/3/10)

मनु की पुत्री 'इड़ा' का वर्णन करते हुए तैत्तिरीय (1/1/4) में उन्हें 'यज्ञान्काशिनी' बताया है। यज्ञान्काशिनी का अर्थ सायणाचार्य ने 'यज्ञ तत्त्व प्रकाशन समर्था' किया है। इड़ा ने अपने पिता को यज्ञ संबंधी सलाह देते हुए कहा-

साऽब्रवीदिडा मनुम् ।
तथा वाऽहं तवाग्निमाधास्यामि
यथा प्रजया पशुभिर्मिथुनैर्जनिष्यसे ।
प्रत्यस्मिंलोकेस्थास्यसि ।
अभि सुवर्गं लोकं जेयसीति ।
-तैत्तिरीय ब्राह्मण (1/4)

इड़ा ने मनु से कहा- मैं तुम्हारी अग्नि का ऐसा अवधान करूँगी जिससे तुम्हें पशु, भोग, प्रतिष्ठा और स्वर्ग प्राप्त हो।

प्राचीन समय में स्त्रियाँ गृहस्थाश्रम चलाने वाली भी थीं और ब्रह्मपरायणा भी। वे दोनों ही अपने-अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करती थीं। जो गृहस्थ-संचालन करती थीं, उन्हें 'सद्योवधू' कहते थे और जो वेदाध्ययन, ब्रह्म उपासना आदि के पारमार्थिक कार्यों में प्रवृत्त रहती थीं, उन्हें 'ब्रह्मवादिनी' कहते थे। ब्रह्मवादिनी और सद्योवधू के कार्यक्रम तो अलग- अलग थे, पर उनके मौलिक धर्माधिकारों में कोई अंतर न था। देखिए -

द्विविधाः स्त्रियो ब्रह्मवादिन्या सद्योवध्वश्च।
तत्र ब्रह्मवादिनी नामुपनयनम् ।
अग्नीन्धनं वेदाध्ययनं स्वगृहे भिक्षाचर्यां च।
सद्योवधूनां तूपस्थिते विवाहे काले कथं
विदुपनयनं कृत्वा विवाहः कार्यः ।
(हारीत धर्मसूत्र 21/20/24)

ब्रह्मवादिनी और सद्योवधू, ये दो प्रकार की स्त्रियाँ होती हैं। इनमें से ब्रह्मवादिनी यज्ञोपवीत, अग्निहोत्र, वेदाध्ययन तथा स्वगृह में भिक्षा करती हैं। सद्योवधुओं का भी यज्ञोपवीत आवश्यक है। वह विवाहकाल उपस्थित होने पर करा देते हैं।

पूर्वकाल में अनेक सुप्रसिद्ध ब्रह्मचारिणी हुई है। जिनका प्रतिभा और विद्वत्ता की चारों ओर कीर्ति फैली हुई थी। महाभारत में ऐसी अनेक ब्रह्मचारिणियों का वर्णन आता है।

भरद्वाजस्य दुहिता रूपेणाप्रतिमा भुवि।
श्रुतावती नाम विभो कुमारी ब्रह्मचारिणी ॥
(महाभारत शल्य पर्व 48/2)

भरद्वाज की श्रुतावती नामक कन्या थी, जो ब्रह्मचारिणी थी। कुमारी के साथ-साथ ब्रह्मचारिणी शब्द लगाने का तात्पर्य यह है कि वह अविवाहित और वेदाध्ययन करने वाली थी।

अत्रैव ब्राह्मणी सिद्धा कौमारब्रह्मचारिणी ।
योगयुक्ता दिवं याता तपःसिद्धा तपस्विनी ॥
- (महाभारत शल्य पर्व 54/6)

योगसिद्धि को प्राप्त कुमार अवस्था से ही वेदाध्ययन करने वाली तपस्विनी सिद्धा नाम की ब्राह्मणी तप करके मुक्ति को प्राप्त हुई।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

बभूव श्रीमती राजन् शांडिल्यस्य महात्मनः ।
सुता धृतव्रता साध्वी नियता ब्रह्मचारिणी ॥
सा तु तप्त्वा तपो घोरं दुश्चरं स्त्रीजनेन ह।
गता स्वर्गं महाभागा देवब्राह्मणपूजिता ॥

महात्मा शाण्डिल्य की पुत्री थी; जिसने व्रतों को धारण किया, वेदाध्ययन में निरंतर प्रवृत्त थी। अत्यंत तप करके वह देव ब्राह्मणों से पूजित हुई और स्वर्ग सिधारी ।

अत्र सिद्धाः शिवा नाम ब्राह्मणा वेदपारगाः ।
अधीत्य सकलान्वेदाँल्लेभिरे मोक्षमक्षयम् ॥
(महाभारत उद्योग पर्व 109/18-19)

'शिवा' नामक ब्राह्मणी वेदों में पारंगत थी। उसने सब वेदों को पढ़कर मोक्ष पद प्राप्त किया।
पांडव पत्नी द्रौपदी की विद्वत्ता का वर्णन करते हुए श्री आचार्य आनंद तीर्थ (माध्वाचार्य) जी ने 'महाभारत निर्णय' में लिखा है-

वेदाश्च युक्ततमस्त्रीभिः कृष्णाद्याभिरिहा खिलः ।

उत्तम स्त्रियों को कृष्णा (द्रौपदी) की तरह सब वेद पढ़ने चाहिए।

तेभ्यो दधार कन्ये द्वे वयुनां धारिणीं स्वधा ।
उभे ते ब्रह्मवादिन्यौ ज्ञानविज्ञानपारगे ।।
(भागवत पुराण 4/1/64)

'स्वधा' की दो पुत्रियाँ हुईं, जिनके नाम वयुना और धारिणी थे। वे दोनों ही ज्ञान और विज्ञान में पूर्ण पारंगत तथा ब्रह्मवादिनी थीं।

विष्णु पुराण 1/10 और 18-19 में तथा मार्कंडेय पुराण अ० 52 में भी इस प्रकार ब्रह्मवादिनी (वेद और ब्रह्म का उपदेश करने वाली) महिलाओं का वर्णन है।
इस प्रकार की नैष्ठिक ब्रह्मचारिणी और ब्रह्मवादिनी नारियाँ अगणित थीं। इनके अतिरिक्त गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाली कन्याएँ भी दीर्घकाल तक ब्रह्मचारिणी रहकर वेद-शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के उपरांत विवाह करती थीं। तभी उनकी संतानें संसार में उज्ज्वल नक्षत्रों की तरह यशस्वी, पुरुषार्थी और गरिमावान होती थीं। धर्मग्रंथों का स्पष्ट आदेश है कि कन्या ब्रह्मचारिणी रहने के उपरांत विवाह करे।

ब्रह्मचर्येण कन्या३ युवानं विन्दते पतिम् ।
(अथर्ववेद 11/7/18)

वाल्मीकि रामायण को विश्व का आदि महाकाव्य कहा जाता है। उसमें भी ऐसे विवरण हैं, जिनमें कि स्त्रियों द्वारा वेदमंत्रों का उच्चारण करने, हवन-यज्ञ, संध्योपासना, अग्निहोत्र आदि करने का उल्लेख है। यथा-

ततः स्वत्स्ययनं कृत्वा मन्त्रविद् विजयैषिणी ।

तब मंत्रों की ज्ञाता (तारा) ने अपने पति (बालि) की
विजय के लिए स्वस्तिवाचक मंत्रों का पाठ किया। कैकेयी के लिए भी 'मंत्रज्ञा' शब्द का प्रयोग वाल्मीकि रामायण में है - **तदा सुमन्त्रं मन्त्रज्ञा कैकेयी प्रत्युवाच।** अर्थात तब मंत्रज्ञा कैकेयी ने सुमंत्र से कहा .....
यमस्मृति' में स्त्रियों के लिए प्राचीनकाल में मौंजी- बंधन, वेदाध्ययन तथा गायत्री उपासना के प्रावधान की बात कही गई है-

पुराकल्पे तु नारीणां मौञ्जीबन्धनमिष्यते ।
अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवाचनं तथा ॥

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

प्राचीन आर्ष साहित्य को देखने पर ऐसा ज्ञात होता है कि जब अपना समाज उन्नत और श्रेष्ठ स्थिति में था, तब तो नारी को पूर्णतः समान स्तर एवं अवसर प्राप्त था, किंतु कालांतर में सामाजिक व्यवस्था में विकृति तथा पक्षपात, एकांगिता की स्थितियाँ उत्पन्न होती गईं, तब नारी पर भी प्रतिबंध लगने लगे। साथ ही समाज के प्रबुद्ध वर्ग द्वारा ऐसे अन्यायपूर्ण प्रतिबंधों का खंडन भी होने लगा। इस अवधि में नारी के अधिकारों का उल्लेख धर्मशास्त्रों में मिलता है, जिसका अर्थ है कि इन अधिकारों की चर्चा आवश्यक हो गई थी। ऐसा तब ही हो सकता है, जबकि उन अधिकारों को सीमित किया जा रहा हो अथवा उन पर प्रश्नचिह्न लगाए जा रहे हों। इसके पहले की अवधि में नारी की हर स्तर पर सहभागिता की स्वाभाविक अभिव्यक्ति धर्मग्रंथों में देखी जाती है। तब उसके अलग से उल्लेख की आवश्यकता ही नहीं समझी जाती थी; क्योंकि नर और नारी के बीच विषमता की उस समाज में कोई बात ही नहीं सोची जाती थी।

वैदिक युग में नारी की पुरुषों जैसी इच्छाएं, क्रियाशीलताएं तथा ज्ञान के प्रमाण वैदिक साहित्य में भरे पड़े हैं। विवाह के समय वर-वधू जो परस्पर संकल्प करते हैं, वे भी उन दोनों की मानसिक तथा सामाजिक समानता के अनुरूप हैं। ऋग्वेद, अथर्ववेद में दोनों के द्वारा संयुक्त रूप से उच्चरित किए जाने वाले मंत्र हैं, जिनमें परस्पर घुल-मिल जाने, प्रेमपूर्ण होने, एक व्यक्तित्व के स्वामी बनने, एकदूसरे के प्रति समर्पित, निष्ठावान रहने के संकल्प अभिव्यक्त हैं। साथ ही वर और वधू द्वारा अलग-अलग कहे जाने वाले मंत्र भी हैं। एक मंत्र में वधू कहती है-

आशासाना सौमनसं प्रजां सौभाग्यं रयिम्।
पत्युरनुव्रता भूत्वा सं नह्यस्वामृतायकम् ॥
(अथर्ववेद 14/1/42)

मैं यज्ञादि शुभ अनुष्ठान हेतु शुभ वस्त्र धारण करती हूँ। शांति, आनंद, संतति, सौभाग्य और समृद्धि की कामना करती हुई मैं सदा प्रसन्न रहूँगी।

शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय संहिता आदि में स्त्रियों द्वारा उच्चरित होने वाले मंत्रों का निर्देश है। यज्ञ में पति-पत्नी दोनों का सम्मिलित रहना आवश्यक होता है और यज्ञ वेद मंत्रों के बिना होता नहीं। तैत्तिरीय संहिता में यह स्पष्ट कहा गया है कि-

यज्ञो वा एष यौऽपत्नीकः ।

बिना पत्नी के यज्ञ नहीं होता।

यह वैदिक युग की स्थिति थी। उस समय स्त्री-पुरुष की समानता नितांत स्वाभाविक मानी जाती थी। उनके बीच भेद-विभाजन की तब कल्पना भी नहीं की जाती थी। बाद में जब स्त्रियों पर प्रतिबंध लगने शुरू हुए, तब उनके द्वारा वेदाध्ययन तथा ब्रह्मविद्याप्राप्ति के अधिकार भी सीमित करने की बात उठी। उस समय नारियों के इन अधिकारों के पक्ष में तर्क दिए जाने लगे। ऐसे तर्कपूर्ण प्रतिपादन वैदिक काल में पश्चाद्वर्ती धर्मग्रंथों में पाए जाते हैं-

आहुरप्युत्तमस्त्रीणाम् अधिकारं तु वैदिके ।
यथोर्वशी यमी चैव शच्याद्यश्च तथाऽपराः ॥
(व्योम संहिता)

श्रेष्ठ स्त्रियों को वेद के अध्ययन एवं वैदिक कर्मकांड का उसी प्रकार अधिकार है, जैसे उर्वशी, यमी, शची आदि ऋषिकाओं को प्राप्त था। भविष्य पुराण (उत्तर पर्व 4/13/63) में कहा गया है-

या स्त्री भर्त्रा वियुक्तापि स्वाचारैः संयुता शुभा।
सा च मन्त्रान् प्रगृह्णातु सभर्ती तदनुज्ञया ॥

उत्तम आचरण वाली विधवा स्त्री वेद मंत्रों को ग्रहण करे। सधवा नारी अपने पति की अनुमति से वेद मंत्रों का पठन-पाठन करे।

ऐसे स्पष्ट प्रतिपादन यही तथ्य सामने रखते हैं कि प्राचीन समय में नारी का नर की ही तरह ज्ञान, तप, तेजस् तथा ब्रह्मवर्चस् में अग्रणी होना सामान्य एवं स्वाभाविक बात थी। उसे पददलित बनाने के प्रयास तो स्वयं पुरुषों के भी पतनकाल में ही प्रारंभ हुए। किसी भी उन्नत समाज में दोनों की ही समान प्रगति अनिवार्य मानी जानी स्वाभाविक ही है ।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 9, Issue 7, July 2022 |

ये उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं कि स्त्रियों को सामान्य गायत्री उपासना से लेकर उच्चस्तरीय योग-साधनाओं तक का पूर्ण अधिकार है। यदि वे पारिवारिक बंधनों में न पड़कर आत्मकल्याण की बात सोचें तो इसे निषेधात्मक दृष्टि से नहीं अपितु आत्मगरिमा के एक उज्जवल पृष्ठ के रूप में ही देखा जाता था।

सन्दर्भ ग्रन्थ - सूची

1. ऋग्वेद - डॉ गंगा सहाय शर्मा , संस्कृत साहित्य प्रकाशन
2. यजुर्वेद -सं. डॉ विश्वेश्वर भट्टाचार्य,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय संस्कृत ग्रन्थमालां ,शोध प्रकाशन योजना
3. सामवेद -वेदवाचस्पति प्रो.सत्यदेव निगमालंकार चतुर्वेदी, प्रतिभा प्रकाशन
4. अथर्ववेद - महामहोपाध्याय पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
5. वाल्मीकि रामायण - गीता प्रेस गोरखपुर
6. महाभारत -गीता प्रेस गोरखपुर
7. श्रीमद्भागवत पुराण - मोतीलाल बनारसी दास
8. तैत्तिरीय ब्राह्मण -सं - शाम शास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास
9. विष्णु पुराण - गीता प्रेस, गोरखपुर
10. मार्कण्डेय पुराण - गीता प्रेस, गोरखपुर
11. भविष्य पुराण- गीता प्रेस, गोरखपुर
12. धर्मसूत्र - काशी हिन्दू विश्वविद्यालय संस्कृत ग्रन्थमालां ,शोध प्रकाशन योजना

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com